Editor
Dr.Bapu G. Gholap

14) मराठी आणि इंग्रजी माध्यमांच्या माध्यमिक शाळांमध्ये राबविल्या जाणाऱ्या नाविन्यपूर्ण अभ्यासपूरक...
प्रा. डॉ.गोकुल शामराव डामरे, शेगांव ||78

15) मुस्लिम मराठी आत्मचरित्रे : चिकित्सक अभ्यास
शहनाज मुनीर शेख, शिरूर ||81

16) भारताच्या अंतर्गत सुरक्षेवर सांप्रदायिकतेचा प्रभाव
प्रा. डॉ. एन झेड पाटील, नवलनगर ता. जि. धुळे ||82

17) बुद्ध तत्त्वज्ञानातील अनित्यवाद
विद्याधर कुंडलीक खंदारे, औरंगाबाद ||89

18) 'काळे पाणी' या आत्मचरित्रात्मक कादंबरीची आशयअभिव्यक्ती वैशिष्ट्ये
डॉ. गामा मुकुंदराव सेलोकर, वडोदा, जि. नागपूर ||92

19) मारवाड़ में प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ : एक अध्ययन
इन्दुबाला, जयपुर ||97

20) भारत में महिलाओं को लैंगिक अपराधों के विरूद्ध संरक्षण
नरेश नागौरी, जोधपुर राजस्थान ||101

21) स्वतंत्र भारत में अनुसूचित जातियाँ : वर्तमान एवं भविष्य
डॉ. निर्मल चक्रधर, बैहर, जिला—बालाघाट (म.प्र.) ||108

22) मधुदीप की कहानियों में निम्न वर्ग की आर्थिक दुर्बलताओं का चित्रण
डॉ. पंकज विरमाल, सुरभि डिण्डोरे, इन्दौर (म.प्र.) ||112

23) पं. सुधाकर शुक्ल के साहित्य में प्रकृति—चित्रण की प्रासंगिकता
संध्या शर्मा, दतिया (म.प्र.) ||115

24) शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक....
संजू देवी शुक्ला, डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी, ग्वालियर (म.प्र.) ||119

25) संयुक्त व एकाकी परिवारों की लिंग—भेद सम्बन्धी अभिवृत्ति का....
मधुबाला पाठक, डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी, ग्वालियर (म.प्र.) ||122

26) मानव जीवन एवं संगीत
डॉ. स्वाति गौर, डॉ. पवन कुमार शर्मा, दमोह (म.प्र.) ||125

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03
Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal
Oct. To Dec. 2022
Issue-44, Vol-09

24

शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

संजू देवी शुक्ला
शोधार्थी, गृहविज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी,
सह–प्राध्यापक,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

****

प्रस्तुत शोध पत्र में ''शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य ''शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना है।

आधुनिक युग में महिलाऐं पारिवारिक उत्तरदायित्व के साथ–साथ अपने व्यावसायिक दायित्वों का भी वहन कर रहीं हैं। प्रारम्भ से ही महिलाओं का प्रमुख दायित्व जिम्मेदारियों का निर्वाह करना है तथा बाल्यावस्था से युवावस्था तक उन्हें इसी अभिवृत्ति के विकास के लिये प्रेरित किया जाता है। परन्तु बदलते परिवेश में महिला शिक्षा, औद्योगीकरण एव एकाकी परिवार, महिला स्वतन्त्रता एवं समानता के उद्घोष के कारण महिलाएँ भी अर्थोपार्जन के लिए निकल पड़ी है। आज हमारे देश में अनेक महिलाऐं उच्च पदों पर आसीन अपने कार्य का निष्पादन सफलतापूर्वक कर रही है।

कार्यकारी महिलाएँ :

कपूर (१९७०) के अनुसार ''जो महिलाएँ शिक्षण समाप्त करके गृहस्थी के कार्यो के साथ–साथ कोई व्यवसाय ग्रहण कर लेती है कार्यकारी महिलाएँ कहलाती है।''

समस्या के संबंध में अध्ययन के उपरान्त यह सारांष निकलता है कि वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत तेजी से संबन्न हो रही है। इस प्रक्रिया से समाज में सभी दिशाओं में परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों से समाज की विभिन्न इकाईयों पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़े हैं। समाज की महत्वपूर्ण एवं आधार भूत इकाई परिवार है। परिवार की धुरी नारी है युग चाहे कोई भी रहा हो समाज का विकास नारी के विकास पर ही आधारित रहा है।

नारी विहीन समाज की कल्पना करना असम्भव है नारी न केवल परिवार की धुरी होती है अपितु पूरी पीढ़ी की निर्माता होती है। शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक दबाव के कारण महिला रोजगार की तरफ बढ़ी है। आज उनकी संख्या इतनी हो गई है कि कार्यकारी महिलाओं का स्वयं एक वर्ग बन गया है।

कामकाजी महिलाओं से तात्पर्य उन महिलाओं से है जो बढ़ती हुई आर्थिक आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक आय की बढ़ोत्तरी में सहयोग देती है। इनमें मजबूर या विवश महिलाऐं ही नहीं बल्कि वे महिलाएं भी सम्मिलित हैं जो एक उपयोगी सामाजिक जीवन जीना चाहती है और परिवार की आय में वृद्धि चाहती हैं। राजगोपाल ने अपनी पुस्तक 'इंडियन वूमन इन दी न्यू एज' (१९३६) में लिखा है कि ''महिलाएं धीरे–धीरे यह महसूस करने लगी हैं कि इंसान के रूप में उनकी भी आकांक्षाएं हैं तथा उनके जीवन का लक्ष्य मात्र अच्छी माँ बन जाने से पूरा नहीं हो जाता बल्कि वे भी इस समाज की सदस्याएं है।'' रॉस ने अपने अध्ययन में यह और अधिक स्पष्ट करते हुए बतलाया कि –''पत्नी का वैतनिक काम धंधों में लगना अब समाज में अनुचित नहीं माना जाता। निःसंदेह इतनी संख्या में विवाहित मध्यम वर्गीय हिन्दू महिलाओं का बिना विरोध के नौकरी कर सकने का मुख्य कारण यह है कि परिवार के रहन–सहन का स्तर बनाये रखने के लिए पत्नी भी पारिवारिक आर्थिक समस्या को समझने लगी है।''

शहरी क्षेत्रों में कार्यकारी महिलायें कार्यालय व संस्थाओं में कार्य करती हैं। जबकि ग्रामीण क्षेत्र की महिलायें ग्रामों में ही रहकर खेतों, मजदूरी आदि कार्य करती हैं।

कार्य संतुष्टि

डॉ. ज्योति प्रसाद के अनुसार "कार्य संतुष्टि का तात्पर्य किसी भी कार्य के सम्पन्न होने के बाद की उस दशा से है, जिसमें वह मानसिक संतुलन, प्रसन्नता तथा संतोष प्राप्त करता है। यह दशा से भविष्य में कार्य करने हेतु प्रेरणा प्रदान करती है, क्योंकि यह उसके जीवन का सुखद अनुभव है। यदि इस समय भी वह पुरस्कृत भी होता है तो उसकी संतुष्टि का स्तर और अधिक उन्नत हो जाता है।"

कार्य संतुष्टि एक जटिल संप्रत्यय है, जो बहुत हद तक मनोवृत्ति तथा मनोबल से संबंध और मिलता–जुलता है। किंतु सही अर्थ में कार्य संतुष्टि अपने निश्चित स्वरूप के कराण एक और मनोवृत्ति से भिन्न है तो दूसरी ओर मनोबल से। औद्योगिक मनोवैज्ञानिक ने कार्य संतुष्टि को दो अर्थों में परिभाषित करने का प्रयास किया।

कार्य संतुष्टि का सीमित अर्थ व्यवसाय कारक है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है, कि कर्मचारी के व्यवसाय से संबंधित कई विशिष्ट कारण है जिनमें पारिश्रमिक, पर्यवेक्षण, कार्य, परिस्थिति, पदोन्नति के अवसर, नियोक्ता के व्यवहार आदि मुख्य है। इन विशिष्ट कारक के प्रति कर्मचारियों की मनोवृत्ति जिस हद तक अनुकूल होती है उसी हद तक कार्य संतुष्टि भी सम्भावित होती है, किंतु यह परिभाषा कार्य संतुष्टि के जटिल स्वरूप को स्पश्ट करने में पूरी तरह सफल नहीं है, क्योंकि कार्य संतुष्टि का संबंध व्यावसाय कारकों के अतिरिक्त अन्य कारकों से भी है। अत: केवल व्यवसाय कारकों के संदर्भ में ही कार्य संतुष्टि को परिभाषित करना युक्तिसंगत नहीं है।

व्यावसायिक अभिवृत्ति

"कार्य या व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध आवश्यकताओं सफलता के लिए वांछित दशाओं लाभों तथा हानियों क्षतिपूर्ति तथा विकास के अवसरों का व्यक्ति का ज्ञान ही व्यवसायिक अभिवृत्ति कहलाता है।" व्यक्ति को अपने जीवन में अनेक निर्णय लेने पड़ते है, अनेक विकल्पों में से किसी एक या कुछ एक का अपने लिए उपयुक्तता तथा भविष्य संबंधी सम्भावनाओं के आधार पर चयन करना होता है। व्यक्ति के जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय होता है। मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि में व्यावासायिक अभिवृत्ति कोई बिन्दु नहीं है, एक विकासात्मक प्रक्रिया है तथा अनुत्क्रमणीय होती है। एक बार लिएगए निर्णय के प्रभाव को भविष्य के दूसरे प्रकार के निर्णयों या अन्य किसी प्रकार से पूर्णत: लुप्त नहीं किया जा सकता है। व्यावसायिक अभिवृत्ति एक वैकल्पिक प्रक्रिया है जो बहुधा लगभग दस वर्शो के अन्तराल में संपन्न होती है। उत्तर बाल्यावस्था में किसी समय आरम्भ होकर आरम्भिक युवावस्था तक पहुंचकर व्यावसायिक अभिवृत्ति की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। इस प्रकार किशोरावस्था की पूरी अवधि व्यावसायिक अभिवृत्ति की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में व्यवसायिक अभिवृत्ति के आयाम–व्यवसायिक आकांक्षा स्तर, नौकरी चुनाव में प्रभाव और पैसा, नौकरी पंसद में दूसरों का उपकार, नौकरी प्रदर्शन में नौकरी जागरूता, व्यवसायिक पंसद में अनिश्चतता, व्यवसायिक समझ, स्वतंत्रता की कमी, व्यवसायिक रुचि कारक परिवर्तन आदि कारकों का अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं–

१. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना।

२. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की व्यवसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं :

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाई हैं–

१. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

२. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

३. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं

Scanned with OKEN Scanner

की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध हेतु दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :

इस शोध समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु प्रथम चरण में सुजानगंज ब्लॉक की कुल १०० शहरी (५०) एवं ग्रामीण (५०) कार्यकारी महिलाओं को सम्मिलित किया गया जो विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित हैं जैसे डॉक्टर, नर्स, शिक्षिका, आंगनबाड़ी कार्यकत्री तथा ऑफिस में कार्य करने वाली महिलाओं को चयनित किया गया।

शोध उपकरण :

तथ्यों का संग्रहण करने हेतु शोधार्थी द्वारा व्यवसायिक अभिवृत्ति के लिए डॉ. मंजू मेहता तथा कार्य संतुष्टि के लिए डॉ. अमर सिंह एवं डॉ. टी.आर शर्मा की मापनी का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण :

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है—

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

निष्कर्ष :

परिकल्पना १ : शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

तालिका क्र. १

व्यवसायिक अभिवृत्ति	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी मान
शहरी कार्यकारी महिलाएं (५०)	१८.३	३.८५	९८	१८.६१
ग्रामीण कार्यकारी महिलाएं (५०)	७.५३	२.२		

९८ स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान ०.०१ सार्थकता स्तर पर २.६३ होता है तथा ०.०५ सार्थकता स्तर १.९९ होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान १८.६१ इन दोनों से अधिक है अत: सार्थक है। अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका क्र. २

परिकल्पना २—शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

कार्य संतुष्टि	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी मान
शहरी कार्यकारी महिलाए (५०)	२०.११	२.४३	९८	५.६६
ग्रामीण कार्यकारी महिलाएं (५०)	१७.५४	२.१०		

९८ स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान ०.०१ सार्थकता स्तर पर २.६३ होता है तथा ०.०५ सार्थकता स्तर १.९९ होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान ५.६६ इन दोनों से अधिक है अत: सार्थक है। अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका क्र. ३

परिकल्पना ३ : शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

कार्य संतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी मान
शहरी कार्यकारी महिलाए (१००)	३८.२३	५.८८	१९८	१८.०८
ग्रामीण कार्यकारी महिलाए (१००)	२५.०७	७.३०		

१९८ स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान ०.०१ सार्थकता स्तर पर २.६१ होता है तथा ०.०५

Scanned with OKEN Scanner

सार्थकता स्तर १.९८ होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान १४.०४ इन दोनों से अधिक है अत: सार्थक है। अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

मुख्य निष्कर्ष :

शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता क्योंकि महिलायें संवेदनशील होती हैं चाहें वह शहरी हों या ग्रामीण हों संतुष्टतता एवं असंतुष्टता का भाव उनमें एक जैसा ही रहता है। व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति भी दोनों में एक सी पाई जाती है क्योंकि ये कार्यकारी भले ही हों परन्तु गृहणी भी होती हैं जिनका प्रथम दायित्व परिवार को साथ लेकर चलना है। इसीलिए शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता है।

सुझाव :

१. कार्यकारी महिलाओं को दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ता है परंतु पारिवारिक सहयोग उन्हें कभी–कभी नहीं मिल पाता है जिससे वे हताश हो जाती है। इसलिए उन्हें परिवार द्वारा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

२. कार्यकारी महिलायें घर एवं बाहर कार्य करके थक जाती हैं तथा तनावग्रस्त भी हो जाती हैं इस हेतु परिवारजनों को उनका ध्यान रखना चाहिए।

३. कार्यालय में पुरुषों की तुलना में महिलाएं पूरी तरह से सहज नहीं हो पाती हैं। पुरुषों को उन्हें सहयोग प्रदान करना चाहिए।

संदर्भ :

- बोहरा, आशारानी (१९८९). ''महिलायें और स्वराज्य'', प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- डॉ. राजकुमार (२००५). ''नारी के बदले आयाम'', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।
- दुबे, श्यामचरण (१९६३). ''वूमेन एण्ड वूमैन गेल इन इण्डिया, वूमेन इन न्यू एशिया, ब्रदर्स इ. वार्ड पेरिस यूनेस्को।
- दत्त, नागयण (२००७). ''महिला अधिकार एवं सशक्तीकरण: एक अध्ययन'' महिला विधि भारतीय, जनवरी–जून २००७, अंक ५०–५१, नई दिल्ली
- गुप्ता सुभाषचन्द्र, (२००४). ''कार्यशील महिलाएँ एवं भारतीय समाज'', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

25

संयुक्त व एकाकी परिवारों की लिंग–भेद सम्बन्धी अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

मधुबाला पाठक
शोधार्थी, गृहविज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी,
सह–प्राध्यापक,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

प्रस्तुत शोध पत्र में संयुक्त व एकाकी परिवारों की लिंग–भेद सम्बन्धी अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। वर्तमान में महिलाओं की उपेक्षा करके उनके अधिकारों से विलग करके लम्बे समय तक नहीं रखा जा सकता है, क्योंकि इससे चतुर्दिक हानि होती है। इसलिए अब महिलाओं की समानता की पुरजोर वकालता की जा रही है। अब लिंगीय असमानता को विभेदक रूप में स्वीकार न करके समाहारक रूप में स्वीकार किया जा रहा है लिंग तथा लैंगिकता विषयी मुद्दों का महत्व व्यक्ति के स्वमनोविज्ञान से लेकर सामाजिक सरोकारों से भी जुड़ा हुआ है जिसका निरूपण इस शोध प्रबन्ध में किया गया है।

परिवार तथा समाज में लिंगों के बीच स्थिति शारीरिक एवं जैविक अन्तर सार्वभौमिक है। इन दोनों में ये अन्तर सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक माने गये है। समाज द्वारा इन्ही सब उत्तरों का लाभ उठाकर एवं जोड़–तोड़ की प्रक्रिया अपना कर नारी का शोषण किया जाता है और जिसकी परिणति स्त्रियों में असामनता की भावना, असुरक्षा की भावना एवं शक्ति को पुरूष तक ही केन्द्रित करने की प्रवृत्तियों के रूप में समाज में सर्वत्र दिखाई देती हैं।